परमेश्वर की सर्वशक्तिशालिता:

हमारा परमेश्वर ''घटता'' नहीं है

परमेश्वर के बारे में किसी भी प्रकार की चर्चा बहुत से कारणों से रुक जाती है। शायद उनमें से सबसे महत्वपूर्ण कारण उसके बारे में हमारी समझ की कमी है। जब अय्यूब की तरह, हमारे सामने परमेश्वर के अस्तित्व की बात आती है, तो हम प्राय: उसकी तरह यह कहने लगते हैं: ''मैं ने तो जो नहीं समझता था वही कहा, अर्थात जो बातें मेरे लिए अधिक कठिन और मेरी समझ से बाहर थीं जिनको मैं जानता भी नहीं था'' (अय्यूब 42:3ख)।

परमेश्वर के बारे में विचार करने में एक और कठिनाई यह है कि वह एक ही समय में सब जगह विद्यमान है जिसकी चर्चा हमें एक-एक करके करनी चाहिए। परमेश्वर एक ही समय में सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है; परन्तु हमें इन सभी गुणों की चर्चा अलग-अलग करनी चाहिए। ऐसा करते समय, हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि परमेश्वर है, वह जानता है, और काम करता रहता है। उसका अस्तित्व कभी मिटता नहीं, उसका ज्ञान कभी कम नहीं होता, और उसकी शक्ति कभी घटती नहीं है।

परमेश्वर को पूरी तरह से समझने की हमारी आशा चालाकी से उसका शिकार करने में नहीं, बल्कि अपने बारे में उसकी अपनी इच्छा से प्रकट करने में है। हमें धन्यवाद करना चाहिए कि उसने प्रकृति (अपनी सृष्टि) में, मसीह (अपने पुत्र) में और पवित्र शास्त्र (अपने वचन) में अपने आप को प्रकट कर दिया है। अब हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अच्छी तरह से समझने के लिए उसके वचन की ओर लौटते हैं।

पुराने नियम में उसकी शक्ति का चित्रण

पुराने नियम में परमेश्वर के सामर्थपूर्ण कामों को दिखाकर उसके सर्वशक्तिशाली होने पर ज़ोर दिया गया है। इससे परमेश्वर की अलौकिक या अमूर्त धारणाएं खारिज नहीं हो जाती हैं। परन्तु, ऐसी धारणाएं पुराने नियम में बहुत ही कम हैं। पुराने नियम में हमें ऐसा परमेश्वर मिलता है जिसकी सामर्थ इतिहास को बदल देती है। मिसर के राज्य पर विपत्तियों की बहुत बुरी मार पड़ी थी (निर्गमन 7-11)। इस्राएलियों को मिसर से निकल जाने देने के लिए लाल समुद्र दो भागों में बंट गया, परन्तु मिसरी सेना उसमें नष्ट हो गई थी (निर्गमन 14;

15)। परमेश्वर के प्रकट होने से सीनै पर्वत हिल गया था और उसमें से धुआं निकला था, और लोग भयभीत हो गए थे। वाचा का संदूक लेकर जा रहे याजकों के साथ इस्राएलियों के यरदन नदी पार करते समय उसका पानी थम गया था (यहोशू 3; 4)। लोगों को दिए गए यहोशू के आदेश ''जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है'' (यहोशू 6:16ख) की पुष्टि में यरीहो की दीवारें इस्राएलियों के सामने धड़ाम से गिर पड़ी थीं। और भी बहुत से उदाहरण जोड़े जा सकते थे, परन्तु ईश्वरीय सामर्थ को दिखाने के लिए इतने ही काफी हैं।

परमेश्वर के लोगों ने उसके पूर्वप्रबन्ध में रहते हुए परमेश्वर की सामर्थ को देखा था। उनका इतिहास उनके साथ परमेश्वर के व्यवहार का अधिनियम था। परमेश्वर की सम्भाल में उनके विश्वास का अर्थ परमेश्वर की शक्ति में विश्वास था। परमेश्वर की सामर्थ में उनका यह विश्वास जो उसके पूर्वप्रबन्ध में मिलता था और पूरा होता था, बहुत से भजनों में भी कोने का पत्थर है। उदाहरण के लिए, हम पढ़ते हैं, ''जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा। मैं यहोवा के विषय में कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा'' (भजन संहिता 91:1, 2)।

परमेश्वर के लोगों को निश्चय था कि यदि वे उस पर भरोसा रखेंगे तो वह उनकी आवश्यकता को पूरा करने वाला और उनका आश्रय होगा। उनका यह विश्वास न केवल इस विश्वास पर आधारित था कि परमेश्वर अपने लोगों को हानि से बचाने और उनका प्रबन्ध करने को तैयार था, बल्कि उनके इस विश्वास में भी था कि *वह ऐसा करने में समर्थ था!*

उसके नाम में उसकी सामर्थ

इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को दिए गए बहुत से नामों से उसकी सामर्थ में उनके विश्वास का प्रमाण मिलता है। भजन 91 में तीन उदाहरण हैं। पहला, ''परमप्रधान'' एलियोन (*'elyon*) का अनुवाद है। दूसरा शब्द, एल (*'El*) प्रधान कनानी देवता के लिए एक आरम्भिक कनानी नाम था। इसका अर्थ था ''शक्तिशाली, सामर्थी।''[1] मूर्तिपूजा को बीच में से निकाल देने पर, ''एल'' नाम इब्रानियों के सच्चे और जीवते परमेश्वर के लिए प्रासंगिक था। भजन 91 में यह नाम सर्वोच्च था: *एलियोन* ''परमप्रधान'' के समान है जो सबसे अधिक सामर्थी है। इस्राएली लोग परमेश्वर की सामर्थ तथा पूर्वप्रबन्ध में उसके द्वारा सम्भालने से भली भांति अवगत थे, जैसा कि इस्राएली माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के नाम रखने से ही संकेत मिलता था। उदाहरणार्थ *एली,* शमु*एल,* और *एलिय्याह*। भजन 91 में तीसरा उदाहरण जो परमेश्वर की सामर्थ में इस्राएलियों के विश्वास को दिखाता है वह है, *शद्दै* का अनुवाद ''सर्वशक्तिमान।''

नये नियम में उसकी सामर्थ की झलक

नया नियम भी उस परमेश्वर को दिखाता है जिसके पास अपनी इच्छा को पूरा करने की सामर्थ है। इसे प्रत्यक्ष रूप से ''... जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है'' (लूका 18:27) जैसे वाक्यों के द्वारा सामने लाया जाता है। पुराने नियम की तरह, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर अपने लोगों की भलाई के लिए अपनी शक्ति का इस्तेमाल करता है, नये नियम में भी परमेश्वर की शक्ति के इस विश्वास को दिखाया गया है: ''... यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (रोमियों 8:31)। रक्षा करने, प्रबन्ध करने, और अपने लोगों को निकालने की परमेश्वर की सामर्थ के इस आश्वासन का सम्बन्ध उनके इस विश्वास से है कि वह उनके निकट है (प्रेरितों 17:27ख) और वह उनके जीवन की हर बात को जानता है (मत्ती 10:29-31)।

जैसे कि बाइबल में स्पष्ट किया गया है, परमेश्वर दूर का, अज्ञानी या निर्बल नहीं है। वास्तव में, ''परमेश्वर की असीमितता'' का यह समस्त खण्ड ज़ोर देता है कि वह सर्वव्यापक है, सर्वज्ञ है, और सर्वशक्तिशाली है। इसका अर्थ यह है कि वह वह परमेश्वर नहीं है जिसका वर्णन देवताओं के रूप में किया गया है: उसने सृष्टि में अपनी महान सामर्थ का इस्तेमाल केवल वापस लेने और संसार को अव्यैक्तिक ढंग से कार्य करते देखने के लिए नहीं किया। न ही वह सर्वेश्वरवाद की शिक्षा वाला परमेश्वर है: उसे उस धारणा द्वारा समझना भी गलत होगा जिसमें कहा जाता है कि ईश्वर इस संसार के कण-कण में व्याप्त है अर्थात जो कुछ भी है वह ईश्वर ही है। निश्चय ही वह फिलॉसफी-थियोलॉजी का परमेश्वर भी नहीं है: वह संसार की प्रक्रियाओं में उलझा नहीं है कि वह अपनी सृष्टि में काम करते हुए उनके द्वारा बदल जाए।[2] परमेश्वर सबसे ऊपर है और अन्तर्यामी है, सब वस्तुओं पर उसका अधिकार है जिनमें हमारे व्यक्तिगत भविष्य भी शामिल हैं।

हम परमेश्वर पर पूर्णतया निर्भर हो सकते हैं। ज्ञान-सम्पन्न विश्वास से उसके सर्वसामर्थी और जीवन बदलने के कार्य अर्थात हमारे छुटकारे को स्वीकार करके ऐसा सम्भव हो जाता है। इतिहास में मोड़ लाने वाली घटना मसीह का क्रूस पर चढ़ना थी। उस ऐतिहासिक क्षण में, एक पर्दा था जो हटा दिया गया और मनुष्य जाति के साथ परमेश्वर का एक नया सम्बन्ध सम्भव हो सका था। क्रूस और मसीह के पुनरुत्थान दोनों में इतिहास को बदलने और परमेश्वर से अनन्तकाल तक हमारे सम्बन्ध मधुर बनाने को सम्भव करना दिखाया गया है। यही तो मसीह का सुसमाचार अर्थात शुभ समाचार है। निश्चय ही अपने कार्य को पूरा करना और अन्तिम फल तो परमेश्वर की सामर्थ में ही है।

प्रासंगिकताएं

हमारा धर्म और हमारा जीवन वही बन जाता है, जैसा हमारा विश्वास होता है कि परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है। परन्तु, हमारा विश्वास ''अन्ध'' विश्वास नहीं है। हम परमेश्वर की सामर्थ के विषय में कठिन प्रश्नों को टालते नहीं हैं। हमें उनका सामना करना ही पड़ेगा। आइए उनमें से कुछ प्रश्नों पर विचार करते हैं।

''परमेश्वर की असीमित शक्ति के किसी अटल वस्तु से टकराने पर क्या होता है ?'' परमेश्वर की शक्ति अपना विरोध करने वाली किसी वस्तु के लिए प्रासंगिक नहीं है। इस प्रश्न में किसी ''अटल वस्तु'' का अस्तित्व ही नहीं है इसलिए यह प्रश्न व्यावहारिक नहीं है। इसमें वास्तविकता को नजरअंदाज़ किया गया है।

ऐसा ही एक प्रश्न है ''क्या परमेश्वर अतीत को बदल सकता है ?'' यह परिकल्पित प्रश्न बीत गए समय के सम्बन्ध में है, परन्तु समय तो अनन्तकाल में नहीं आता। इस प्रश्न का उत्तर ही हमें किसी दुष्ट बदमाश जो मर गया है, के उद्धार के लिए प्रार्थना करने से दूर रखता है।

कई बार दूसरे प्रश्न भी सुनने में आते हैं: ''क्या परमेश्वर झूठ बोल सकता है ?''; ''क्या वह पाप कर सकता है ?''; ''क्या वह मर सकता है ?'' हर प्रश्न का गम्भीर उत्तर है ''नहीं!'' ऐसे काम उसके स्वभाव के विपरीत हैं। वह झूठ नहीं बोल सकता क्योंकि वह पूर्णतया सच्चा है (यिर्मयाह 10:10)। वह पाप नहीं कर सकता क्योंकि वह पूर्णतया शुद्ध है (1 यूहन्ना 3:2, 3)। वह मर नहीं सकता क्योंकि वह तो स्वयं जीवन है (भजन 36:9; 133:3ख)। परमेश्वर अपने स्वभाव के विपरीत कुछ भी नहीं कर सकता। हमारे पास यह जानकर धन्यवाद करने का आधार है कि परमेश्वर इतना निर्बल नहीं है कि वह जैसा मन में आए वैसा काम करे। वह विश्वासयोग्य परमेश्वर है (व्यवस्थाविवरण 7:9; 1 कुरिन्थियों 10:13)। वह अपने स्वभाव से बदलता नहीं है (याकूब 1:17, 18)।

अन्त में, ''क्या परमेश्वर कभी अपनी शक्ति को सीमित करता है ?'' इस प्रश्न का उत्तर बड़ी सावधानी से दिया जाना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर का स्वभाव ही सर्वशक्तिशाली *होना* है। इसलिए, उसके लिए अपनी शक्ति को, अर्थात सर्वशक्तिशाली होने को सीमित करना उसके स्वभाव के विपरीत है। परन्तु, अपनी असीम बुद्धि से वह अपनी असीमित शक्ति को सीमित ढंग से ऐसे इस्तेमाल करना चुन सकता है जो पूर्ण रूप से उसकी असीमित इच्छा को पूरा करने के लिए हो। यह बात पवित्र शास्त्र के पदों में सबसे अधिक ज़ोर देकर कही जाती है। शायद ज्ञान पाने की इच्छा करने वाले हम में से हर किसी को भी पौलुस के साथ यह प्रार्थना करनी चाहिए:

> और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और *उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार* जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया (इफिसियों 1:18-21)।

पाद टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. एॅफ़. अल्ब्राइट, *आर्कियोलोजी एण्ड द रिलिजन ऑफ़ इज़राएल* (बाल्टीमोर: जॉन्स हॉप्किन्स, 1956), 72. [2]कार्ल एफ़. एच. हेनरी, *गॉड, रैवलेशन एण्ड ऑथॉरिटी,* vol.1, *गॉड हू स्पीक्स एण्ड शोज़* (वाको, टैक्स: वर्ड पब्लिशिंग कं., 1976)। इसी पुस्तक में ''Deism,'' ''Pantheism,'' और ''Process Philosophy-Theology'' के लिए विषय सूची में देखिए, या कोई मान्य थियोलोजिकल रैफ़रैन्स वर्क देखिए।

सृष्टिकर्ता या संयोग?

न्यूयॉर्क स्टेट एकेडमी ऑफ़ साइंस के पूर्व प्रेसीडेंट, डॉक्टर ए. क्रेसी मॉरिसन ने कहा था:

> एक प्रमाण है, जो ज़ोरदार ढंग से सांकेतिक मार्गदर्शक की तरह हर उद्देश्य के पीछे है ... हमने पाया है कि संसार सही स्थान पर है, पृथ्वी की ऊपरी सतह दस फुट के भीतर समायोजित है, और यदि समुद्र कुछ फुट और गहरे होते तो हमें कोई ऑक्सीजन अथवा वनस्पति न मिलती। हमने पाया है कि पृथ्वी चौबीस घण्टे घूमती रहती है और यदि इस परिक्रमा में कोई भी व्यवधान पड़ जाए, तो पृथ्वी पर जीवन असम्भव हो जाएगा। यदि सूर्य के इर्द-गिर्द पृथ्वी की गति भौतिक रूप से तीव्र अथवा धीमी हो जाए तो जीवन का इतिहास, यदि कोई हो, बिल्कुल ही अलग होगा। हमें पता चलता है कि सूर्य उन हज़ारों कारणों में से एक है, जिनसे पृथ्वी पर हमारा जीवन सम्भव होता है, इसका आकार, घनत्व, तापमान और इसकी किरणों की विशेषता, सब उचित मात्रा में होने चाहिए, और हैं भी। हम पाते हैं कि वातावरण की गैसें एक दूसरे से समायोजित हैं और मामूली सा बदलाव भी घातक हो सकता है ...।
>
> पृथ्वी के आयतन, अंतरिक्ष में इसके स्थान और समायोजनों की सूक्ष्मता पर विचार करें, इन समायोजनों के घटित होने का क्रम दस लाख में से एक है, और इन सभी घटनाओं के घटित होने के अवसर का अनुमान नहीं लगाया जा सकता ... इसलिए, इन तथ्यों का अस्तित्व, संयोग के किसी भी नियम से मेल नहीं खाता ... निस्सन्देह प्रकृति के आश्चर्यों का सर्वेक्षण यह दर्शाता है कि किसी दूसरे उद्देश्य के लिए इन्हें बनाया गया था। उस सर्वोच्च जीव के द्वारा जिसे हम परमेश्वर कहते हैं, इसके असीम विस्तार में एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है।[1]

पाद टिप्पणियां

[1]ए. क्रेसी मॉरिसन, *मैन डज़ नॉट स्टैंड अलोन* (न्यूयॉर्क: फ्लेमिंग एॅच. रिवैल कं., 1944), 94-95; बैट्सेल बैरेट बैक्सटर, *आई बिलीव बिकॉज़* ... (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: बेकर बुक हाउस, 1971), 66 में उद्धृत।